# Periodic Test – 1
# Class – 8
# Hindi

पाठ।– ध्वनि — कवि – 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'

कविता का सारांश — प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति के प्रति मानवीय संवेदना व्यक्त की है। कवि के उपवन में अभी वसंत आया है। वह अपने स्वप्निल कोमल हाथों से अलसाई कलियों पर हाथ फेरते हुए प्रभात के आने का संदेश देना चाहता है। वह कलियों को जगाना चाहता है और प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन के अमृत से सींचकर हरा-भरा करना चाहता है।

प्रश्न – अभ्यास

कविता से –

प्र०।– कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा?

उत्तर– ① कवि आत्मविश्वास से भरा हुआ है।
② कवि के उपवन में वसंत का आगमन हुआ है।
③ वह अपने स्वप्न भरे हाथों से कलियों को जगाना चाहता है और उन्हें अपने जीवन-अमृत से सींचकर हरा-भरा करना चाहता है।
④ खिले फूलों को वह अपने जीवन-संसार में ले जाना चाहता है जिससे उसका जीवन भी सुंदरता और खुशियों से भर उठे। इस प्रकार कवि कल्पनाशील कार्य कर रहा है।

प्र०2– फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन-सा प्रयास करता है?

उत्तर– ① कवि कलियों की निद्रा दूर भगाने का प्रयास करता है।
② वह उनके तंद्रा व आलस्य को दूर करने का प्रयास करता है।
③ वह अपने नवजीवन के अमृत से सहर्ष सींचने का प्रयास करता है।

प्र०3 कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है?

उत्तर– ① अपने स्वप्न भरे कोमल हाथ उन पर फेरना चाहता है।

② पुष्पों को एक नए मनोहर प्रभात का संदेश देना चाहता है।
③ उनका तंद्रालस्य छीन लेना चाहता है।

## पाठ 2 - लाख की चूड़ियाँ
### लेखक - कामतानाथ

प्र०1- बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका क्यों कहता था?

उत्तर- ① उसके मामा के गाँव में रहने वाला बदलू मीनहार उसे लाख की रंग-बिरंगी मनमोहक गोलियाँ बनाकर दिया करता था। ये गोलियाँ उसे बहुत प्रिय थी।
② बदलू उसके लिए दूध की मलाई बचाकर रखता था और लेखक को दिया करता था।
③ लेखक को बदलू के घर पर स्वादिष्ट आम खाने को मिलते थे।
④ गर्मी की छुट्टियों में वहाँ जाने पर उसका मन बहल जाता था।
बदलू, लेखक के मामा के गाँव का रहने वाला था। इस तरह उसे बदलू को मामा कहना चाहिए था। लेखक के गाँव के सारे बच्चे बदलू को बदलू काका कहते थे। लेखक बचपन में रिश्ते की गहराई को नहीं जानता था इसलिए गाँव के सब बच्चों की तरह वह भी बदलू को बदलू मामा न कहकर बदलू काका कहता था।

प्र०2- वस्तु-विनिमय क्या है? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उत्तर- ① प्राचीन काल में रुपए-पैसों का प्रचलन नहीं था। उस समय भी लोग एक-दूसरे से चीजें ले देकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति करते थे। "वस्तुओं के लेन देन की जिस प्रथा में वस्तुएँ, वस्तुओं के बदले में दी अथवा ली जाती थीं, उसे वस्तु-विनिमय पद्धति कहते थे।"

वस्तु-विनिमय की पद्धति में आए बदलाव—
① यह पद्धति बहुत कम प्रयुक्त होती है।
② अनेक वस्तुओं का संग्रह करना कठिन या असंभव कार्य है।
③ यह जरूरी नहीं कि बदले में देने के लिए हमारे पास जो वस्तुएँ हैं, लेने वाले को उसकी आवश्यकता हो।

वस्तु-विनिमय की प्रचलित पद्धति रुपया-पैसा है। आजकल रुपये-पैसे के द्वारा ही चीजें खरीदी और बेची जाती हैं।

प्र०3 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।' इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर- इस मशीनी युग में कुटीर उद्योग-धंधों को बहुत नुकसान हुआ है। गाँवों में रहने वाली जनता जिन काम धंधों को करते हुए अपनी आजीविका चलाती थी, वे आज मशीनों से हो रहे हैं। मशीनों से बनी चीजों की गुणवत्ता अच्छी और मूल्य कम है। लोगों के काम-धंधे छिन गए हैं। कोई काम न होने से लोग लाचार होकर समाज पर बोझ बन गए हैं।

प्र०4 बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उत्तर- बदलू चूड़ी बनाने वाला एक कुशल कारीगर था। उसकी बनाई लाख की चूड़ियाँ गाँव की सभी औरतें पहनती थी। उस समय यदि वह गाँव की किसी औरत को काँच की चूड़ियाँ पहने देखता तो कुढ़ता और दो-चार बातें सुना भी देता।

समय बीतता गया। उसके गाँव की महिलाओं ने मशीनों से बनी काँच की चूड़ियाँ पहनना शुरु कर दिया। उसकी चूड़ियों की गाँव में पूछ कम हो गई। उसका काम बंद हो गया। उसकी गाय बिक गई और वह बीमार भी रहने लगा।

प्र०5 मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर- (1) मशीनी युग के कारण गाँव की महिलाएँ मशीन की बनी हुई काँच की चूड़ियाँ पहनने लगी। इससे वह उपेक्षित हो गया।

(2) उसकी बनाई लाख की चूड़ियों की पूछ घट गई। इससे उसका पैतृक व्यवसाय बंद हो गया।

(3) इस पेशे से आने वाली आय समाप्त हो गई।

(4) बदलू की गाय बिक गई, वह बीमार रहने लगा।

(5) अपने व्यवसाय की उपेक्षा देखकर बदलू लाचार, अशक्त और कुंठित हो गया।

पाठ 3 — बस की यात्रा
लेखक - हरिशंकर परसाई

प्र01 — "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"
• लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जाग गई?

उत्तर- ① बस के टायर घिसकर बिल्कुल ही खराब हो रहे थे। वे कहीं भी, कभी भी फट सकते थे। इससे बस पलट सकती थी। इससे अन्य यात्रियों के साथ-साथ उनकी भी जान जाने का खतरा था, परन्तु वे जान को जोखिम में डालकर यात्रा कर रहे थे।
② जैसी उत्सर्ग की भावना उनके अंदर है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है।
③ हिस्सेदार साहब की गरीबी, मजबूरी, असहाय स्थिति को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा जाग गई।

प्र02 — "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते।"
• लोगों ने यह सलाह क्यों दी?

उत्तर — ① बस पुरानी, टूटी-फूटी व जर्जर थी।
② लोगों को बस की सच्चाई का पता था।
③ बस कभी भी और कहीं भी खराब हो सकती थी।
④ बस यात्रियों को गन्तव्य तक ठीक से पहुँचा देगी यह कहना मुश्किल था।

प्र03 = "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"
• लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उत्तर — लेखक को ऐसा इसलिए लगा क्योंकि जब बस को स्टार्ट किया गया, तब वह जोर से आवाज करती हुई हिलने लगी। बस का इंजन हिलना चाहिए था लेकिन पूरी बस हिल रही थी। हिलने और आवाज़ करने से ऐसा लगता था कि पूरी बस इंजन बन गई है। लेखक व उसके साथी समझ रहे थे कि वे बस में नहीं, किसी इंजन में बैठे हैं।

प्र०4 "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।"
• लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर- लेखक को यह सुनकर हैरानी इसलिए हुई क्योंकि देखने में तो यह बस अत्यंत पुरानी, टूटी-फूटी व जर्जर लग रही थी। लेखक को लग रहा था कि बस को चलाने के लिए धक्के की आवश्यकता होगी। लेकिन वह बस स्टार्ट हो गई।

प्र०5 "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।"
• लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर- बस हिल रही थी व सड़क पर लहराकर चल रही थी। लेखक जब पेड़ को देखता तो उसे लगता कि बस पेड़ से टकरा जाएगी। वह पेड़ निकल जाता तो दूसरे का इंतजार करता। पेड़ को देखते ही लेखक घबरा जाता।

**********